|  |  |
| --- | --- |
| **TajMahal’s Spiritual Message** | **ताजमहल का आध्यात्मिक संदेश** |
| Dr Syed ZafarMahmood, President, Zakat Foundation of India  [zakatindia.org](http://zakatindia.org) | डॉ. सैयद जफर महमूद, अध्यक्ष, जकात फाउंडेशन ऑफ इंडिया, [zakatindia.org](http://zakatindia.org) |
| TajMahal is known all over the world for its singular beauty and as a symbol of ardent love. But, the third aspect of its celestial revelatory panorama remains mostly obscure from the public cognizance. | ताजमहल दुनियाभर में अपने अद्वितीय सौंदर्य और प्रेम का बेमिसाल प्रतीक माना जाना जाता है लेकिन जनसामान्य इस दिव्य एवं भव्य इमारत के तीसरे पहलू के बारे में लगभग अनजान ही है। |
| 2.  On the gigantic double arches in all four sides of the Taj facade, carefully selected verses from the holy Quran are calligraphed each beginning from lower right side going all the way up, running to the left and creeping down till the left lower side. The calligraphy is made by jasper inlaid in white marble panels. Higher panels are written slightly larger to reduce the skewing effect when viewing from below. Inside the main chamber also such verses as well as ninety nine Arabic names of God are inscribed. | 2. ताज के अग्रभाग के चारों तरफ विशालकाय दोहरे मेहराब पर पवित्र कुरान की चुनिंदा आयतें हर तरफ नीचे दाईं ओर से ऊपर की ओर, बाईे तरफ से निचले क्रम में नीचे बाईं ओर तक सुलेखित हैं। यह सुलेख सफेद संगमरमर के पैनल में जबरजद में जड़ा है। नीचे से देखने पर तिरछापन कम करने के लिए ऊपरी पैनन थोड़े बड़े लिखे गए हैं। मुख्य चैंबर के अंदर भी अरबी में ऐसी आयतों के साथ ईश्वर के निन्यानवे नाम अंकित हैं। |
| 3.  From the mausoleum’s 223 feet height and 112 feet width one can make out the dimensional enormity of the eight marble arches on which the Quranic calligraphy is inscribed. Additionally there is similar marble inscription around the outer red stone gates each of which is 70 feet high. | 3. 223 फुट ऊँचे और 112 फुट चौड़े मकबरे से संगमरमर के आठ विशालकाय मेहराब देखे जा सकते हैं, जिन पर कुरान के सुलेख हैं। इसके अलावा ऐसा शिलालेख यहां के लाल संगमरमर पत्थर के 70 फुट ऊंचे बाहरी फाटकों पर उत्कीर्ण है। |
| **Adam, other Messengers and Books** | **एडम, अन्य देवदूत और ग्रंथ** |
| 4.  As per the message mirrored by TajMahal, Adam was the first man and the first messenger of God. As humanity progressed, God appointed fresh messengers in different parts of the world and in various phases of human history. To some of them He revealed His message that can be broadcast in the form of a scripture. | 4. ताजमहल में अंकित संदेश के अनुसार, एडम पहले इंसान और ईश्वर के पहले फरिश्ते/देवदूत थे। मानवता विकसित होने के साथ-साथ, ईश्वर ने दुनिया के अलग-अलग हिस्सों में मानव इतिहास के विभिन्न चरणों में नए फरिश्ते/देवदूत नियुक्त किए। उनमें से कुछ को उन्होंने अपना संदेश दिया, जिसका व्याख्यान शास्त्र के रूप प्रचारित हुआ। |
| 5.  Each such message was meant for the entire humanity though these were clothed in the respective local languages of the recipient communities. Quran is in Arabic which was the language of Prophet Mohammad (peace be upon him) and his contemporaries in Arabia. Names of some of the earlier messengers and books have been mentioned in the Quran and many have not. Twenty-five messengers and three revealed books are mentioned by name. | 5. ऐसा प्रत्येक संदेश स्थानीय भाषा में लेकिन पूरी मानवता के लिए था। कुरान अरबी में है, जो अरब में पैगंबर मोहम्मद (उन पर शांति बरसे) और उनके समकालीन लोगों की भाषा थी। पूर्ववर्ती फरिश्तों/देवदूतों और ग्रंथों के कुछ नाम कुरान में वर्णित हैं परंतु अनेकों के नहीं हैं। इनमें पच्चीस फरिश्तों /देवदूतों और तीन ज्ञात ग्रंथों के नामों का उल्लेख किया गया है। |
| 6.  When chronologically appraised, the list of messengers begins from Adam and includes, among others, Abraham, Isaac, Ishmael, David, Jacob, Joseph, Moses and Christ. The books mentioned are Psalms, Old Testament and New Testament. Yet, God says that the human beings should believe in and revere all the messengers and all the revelations. This injunction verbatim forms part of the Quran (2.285). | 6. कालानुक्रम में मूल्यांकन करने पर फरिश्तों /देवदूतों की सूची आदम से शुरू होती है और उसके बाद इब्राहीम, इसहाक, इश्माएल, डैविड, जैकब, जोजेफ, मूसा और मसीह के नाम हैं। जिन ग्रंथों का उल्लेख है, उनमें स्तोत्र (साम), ओल्ड टेस्टामेंट और न्यू टेस्टामेंट हैं। इसके बावजूद, ईश्वर का कहना है कि मनुष्य को सभी फरिश्तों और देवदूतों में विश्वास और रहस्योद्घाटन पर भरोसा करना चाहिए। कुरान में अक्षरश: यही हिदायत दी गई है (2.285)। |
| **The Preserved Tablet - Sanctum sanctorum of all revelations** | **लौह-ए-महफूज (द प्रेजर्ब्ड टेबलेट)- सबसे पवित्र रहस्योद्घाटन** |
| 7.  It is understood from Quran that even before God created life outside the heavens, He caused to be written, in what is known as the Protected Tablet (*LauhMahfooz*), His grand comprehensive message that was set to be revealed to humanity - intermittently and repeatedly - through a battery of messengers during the millennia to come. On the eve of beginning the earthly creation, this comprehensive message was brought down to the worldly sky. From there, it was revealed to God's messengers at various global locations in different languages, many times over, in different phases of human history. Thus, the Preserved Tablet is the sanctum sanctorum of all revelations. | 7. कुरान से यह बात समझ में आती है कि स्वर्ग से बाहर जीवन का सृजन करने से पहले ईश्वर ने लिखित रचना करवाई, जिसे लौह-ए-महफूज (द प्रेजर्ब्ड टेबलेट) के रूप में जाना गया। उस ईश्वर ने अपने अद्भुत व्यापक संदेश देवदूतों के माध्यम से प्रकट किए, जिनका सदियों तक मानवता के कल्याणार्थ तत्क्षण और बारंबार प्रयोग किया जा सके। ब्रह्मांड की सृष्टि की शुरूआत की पूर्व संध्या पर, यह व्यापक संदेश संसार में प्रकट हुआ, जिन्हें दुनिया के विभिन्न स्थानों पर, अलग-अलग भाषाओं में, मानव इतिहास के विभिन्न चरणों में देवदूतों/फरिश्तो/देवताओं ने समझा। इस तरह, परम गुप्त रहस्य (प्रेजर्ब्ड टैबलेट) सभी रहस्योद्घाटनों में सबसे पवित्र है। |
| **Purpose of creating humanity** | **मानवता सृजन का उद्देश्य** |
| 8.  God goes on to explain that humanity was created by Him to test the comparative levels of righteousness among the human beings, or absence thereof. Worldly life is temporary and insignificant, it is only a trial. The award or punishment for good or bad deeds done here will be given in the next life which will be everlasting and permanent. The final dwelling place will be either Heaven or Hell. That would be decided on the Day of Judgement when all human beings will be resurrected. | 8. ईश्वर ने समझया कि मानव जाति में धर्म-अधर्म का तुलनात्मक स्तर जांचने के लिए मानवता की रचना की गई है। सांसारिक जीवन क्षणिक और तुच्छ है, जो महज एक इम्तिहान है। यहां पर किए गए अच्छे शुभ-अशुभ कर्मों का फल अगले जन्म में दिया जाएगा, जो शाश्वत और स्थायी होगा। जीव का अंतिम निवास स्वर्ग या नर्क होगा। इसका फैसला कयामत के दिन होगा, जब सभी मनुष्यों को पुनर्जीवित कर दिया जाएगा। |
| 9.  The moral of the story is that the human beings should try to be more and more righteous during their limited tenure in this world. | 9. इस कथा से यह नैतिक शिक्षा मिलती है कि इस संसार में अपने सीमित जीवन में मनुष्य को अधिकाधिक सतकर्म और धर्म की राह चलना चाहिए। |
| **Shahjahan’s service to mankind** | **मानव जाति के प्रति शाहजहां की सेवा** |
| 10.  This realization seems to have intensely dawned upon Emperor Shahjahan after the immature death of his beloved queen. So, in addition to creating a long lasting memorial for her - in brick, mortar and marble - the monarch also used the edifice to telecast his supernatural realization for the spiritual pleasure and benefit of the upcoming generations of humanity. | 10. इससे लगता है कि अपनी प्रिय रानी की असामयिक मौत के बाद सम्राट शाहजहां को बोध हुआ हो। इसलिए, उसकी याद में ईंट, गारे और संगमरमर में चिरस्थाई स्मारक बनाने के अलावा आने वाली पीढि़यों के आध्यात्मिक आनंद और फायदे के लिए बादशाह ने अपना अलौकिक ज्ञान प्रसारित करने हेतु इस इमारत का इस्तेमाल किया हो। |
| 11.  He expanded his architectural project to include imparting to the millions of p rospective visitors to the shrine - and today's online surfers sitting in the cozy comfort of their houses and offices the world over - some nuances of God's Message to humanity. Proper appreciation thereof is sufficient to keep the day to day activity of human soul altruistically attuned toward the service of the fellow creatures, elevating it to a level much above the confines of mundane passion. | 11. लाखों संभावित सैलानियों को इस इमारत की ओर आकर्षित करने के लिए उसने अपनी वास्तुशिल्प परियोजना को विस्तार दिया। आज तो दुनिया भर में ऑनलाइन सर्फिंग करने वाले अपने घर और कार्यालयों में आराम फरमाते हुए - मानवता के लिए ईश्वरीय संदेश की बारीकियों के नमूने की झलक पा लेते हैं। इसलिए, मनुष्य की सेवा में परोपकार के कार्य में लिप्त मानवीय आत्मा के क्रिया-कलापों की सराहना करना पर्याप्त होगा, जो इसे सांसारिक वासना के दायरे से बहुत ऊपर उठाता है। |
| **Bill Clinton on TajMahal** | **ताजमहल में बिल क्लिंटन** |
| 12.  President Bill Clinton had one said that there are two kinds of people in the world, those who have seen the TajMahal and those who haven’t. But, even Clinton didn’t know that appreciating mere marble beauty is not the full realization of the Taj. It’s  intrinsic beauty is the Beauty of God manifested through its widespread Quranic calligraphy that was created by the Persian calligrapher Abdul Haq who came to India from Shiraz, Iran, in 1609. Shah Jahan conferred the title of "Amanat Khan" upon him as a reward for his dazzling virtuosity. | 12. राष्ट्रपति बिल क्लिंटन ने एक बार कहा था कि दुनिया में दो प्रकार के लोग हैं, एक वे जिन्होंने ताजमहल देखा और दूसरे वे, जिन्होंने ताजमहल नहीं देखा। लेकिन क्लिंटन को मालूम नहीं था कि संगमरमर में तराशी गई खूबसूरती की प्रशंसा कर देने भर से ताजमहल का संपूर्ण बोध नहीं हो जाता। इसकी अंतर्निहित खूबसूरती ईश्वर का सौंदर्य है, जो शिराज, ईरान से 1609 में भारत आए फारसी सुलेखक अब्दुल हक के माध्यम से कुरान का यह सुलेख प्रकट हुआ। शाहजहां ने उसकी शानदार कलाप्रवीणता के लिए उसे "अमानत खान" पुरस्कार से सम्मानित किया। |
| 13.  In the coffee table book published in 2018 by Zakat Foundation of India umpteen specific camera views of the TajMahal have been presented that focus the calligraphic beauty of the wonderful monument. Along side each photo view the theme of the Quranic engraving has been briefly summarized. For this purpose cues have been taken from well known translations and commentaries; may God bless the noble authors and their associates. Some of these divine injunctions are given as follows. | 13. जकात फाउंडेशन ऑफ इंडिया की 2018 में प्रकाशित कॉफी टेबल बुक में कैमरे के माध्य्म से ताजमहल के अनेक विशिष्ट दृश्य दर्शाए गए हैं, जिसमें शानदार स्मारक के सुलेख के सौंदर्य पर फोकस किया गया है। प्रत्येक फोटो के बगल में कुरान उत्कीर्णन की थीम संक्षेप में प्रस्तुत की गई है। इस प्रयोजन के संकेत प्रसिद्ध अनुवादों और टिप्पणियों से लिए गए हैं; ईश्वर इन महान लेखकों और उनके सहयोगियों को आशीर्वाद दे। इनमें से कुछ दिव्य हिदायतें इस प्रकार हैं। |
| **Code of conduct for human behavior** | **मानवीय व्यवहार के लिए आचार संहिता** |
| 14.  Among the Quran’s chapters enshrining the Taj is Surah Ikhlas (ch 112) which establishes the Oneness of the Creator i.e. the doctrine of Tawhid. It says that God is without equal, without origin and unlike anything else that exists. The fourth line, ‘Nothing is like Him’ is a fundamental statement of ‘tanzih’ i.e. divine exclusivity and inimitability - God as the incomparable. This surah was also inscribed on the Dome of the Rock at Jerusalem by Abd-al-Malik ibnMarwan . | 14. ताजमहल में कुरान के जो अध्याय दर्शाए गए हैं, उनमें सूरह इखलास (अध्याय 112) है, जिसमें सृष्टिकर्ता के एक होने अर्थात तवहीद के सिद्धांत की पुष्टि की गई है। इसमें कहा गया है कि ईश्वर अद्वितीय, अजन्मा और सबसे जुदा है। इसकी चौथी पंक्ति में लिखा है, उसके समान कुछ भी नहीं है, यह 'तनजीह' का मूल कथन है, अर्थात् दैवीय विशिष्टता और असमानता–ईश्वर अतुलनीय है। यह सुराह अब्द-अल-मलिक इब्न मारवान द्वारा यरूशलेम में रॉक के गुंबद पर लिखा गया था। |
| 15.  In Surah Al-Takvir (ch 81) female infanticide has been declared punishable. Besides, through many Surahs the divine scheme and code of human conduct have been elucidated. The scripture say: God has breathed His spirit in each one of the human beings (38.72) casting duty upon him or her to imbibe some godly qualities. Over every possessor of knowledge there is one knowing more (12.76); thus nobody should be proud of what he knows. | 15. सूरा अल-तकवीर (अध्याय 81) में कन्या भ्रूण हत्या को दंडनीय घोषित किया गया है। इसके अलावा, अनेक सूरा में दिव्य ईश्वरीय योजना और मानव आचरण कोड का वर्णन किया गया है। यह ग्रंथ कहता है: ईश्वार ने हर इंसान (38.72) में अपनी आत्मा डाली है और कुछ ईश्वरीय गुणों को आत्मसात करने के लिए उसके लिए कुछ कर्तव्य बनाए हैं। मनुष्य को ज्ञान प्राप्ति के बाद भी और जानना शेष रहता है (12.76); इस प्रकार व्यक्ति को अपने ज्ञान पर पर गर्व नहीं करना चाहिए। |
| 16.  God likes us being good hosts (12.59). God also likes prostration as expression of thanks to Him (2.58). In an individual’s wealth his needy relatives have a right (17.26). Contracts must be fulfilled, these will be asked for (17.34). On the day of judgement no intercession will be accepted from anybody (2.48). One should fear only God, none else (16.51, 27.10, 28.31). | 16. ईश्वर की ख्वाहिश हमें नेक इंसान (12.5 9) बनाने की है। ईश्वर को अपनी स्तुति की अभिव्यक्ति में दंडवत प्रणाम पसंद है (2.58)। व्यक्ति के धन पर उसके जरूरतमंद रिश्तेदारों का अधिकार है (17.26)। फर्ज हर हाल में पूरे किए जाने चाहिएं, इनका हिसाब मांगा जाएगा (17.34)। कयामत के दिन कोई बीच-बचाव नहीं होगा(2.48)। सिर्फ ईश्वर से डरें, किसी और से नहीं (16.51, 27.10, 28.31)। |
| 17.  God talks of His great plan of networking the holiday humanity into prophetic communities and books to many of them (2.38). Before accepting a supplication God wishes the believer to exhaust all worldly effort (2.60). One is under divine command to lower the wings of humility to the parents (17.24). Before advising others for righteousness one should practice it oneself (2.44). | 17. ईश्वर की महान योजना अकर्मण्यता को त्यागकर मानव को पैगम्बर के उपदेशों पर चलने के लिए प्रेरित करती है (2.38)। ऐसा न करने पर वह उनके कर्म दर्ज कर लेता है। प्रार्थना स्वीकार करने से पहले ईश्वर चाहता है कि आस्तिक व्यक्ति समस्त सांसारिक प्रयास करे (2.60)। माता-पिता के साथ अच्छा व्यवहार करना ईश्वर का आदेश है (17.24)। दूसरों को अच्छाई का पाठ पढ़ाने से पहले, उस पर स्वयं अमल करें (2.44)। |
| 18.  Out of one’s earning and wealth one should keep for self only as much as is required for comfortable life, balance should be incurred on others’ well being (2.219). Extended family and neighborhood are basic units of society for utilitarian proactivity (2.177, 4.36, 17.26, 30.38, 33.6, 47.22). Wealth must keep on circulating in the society rather than remaining confined in a few hands (59.7). Duly observe the rights of the wombs that bore you (4.1). God helps those who help His cause (22.40). | 18. अपनी कमाई और धन में से अपने लिए सिर्फ उतना रखें, जितना सहज जीवन के लिए जरूरी हो, शेष राशि दूसरों की भलाई (2.219) में लगाएं। बड़ा परिवार और पड़ोस, उपयोगितावादी सक्रियता (2.177, 4.36, 17.26, 30.38, 33.6, 47.22) के लिए समाज की बुनियादी इकाइयां हैं। धन कुछ हाथों में सीमित रहने के बजाय समाज में सक्रिय रहना चाहिए (59.7)। जिस मां कोख से तुम्हारा जन्म हुआ, उसकी सलामती का ध्यान रखें (4.1)। ईश्वर उनकी मदद करता है जो उसके बताए रास्ते पर चलते हैं (22.40)। |
| 19.  Thus, a visit to the Taj should not be limited to appreciating its temporal charm commemorating somatic love between two humans but it should encompass learning and cherishing the divine injunctions inscribed on the monument and thus imbibing qualities of head and heart thus making oneself a better human being and a more useful world citizen. | 19. इस प्रकार, ताज के दीदार को दो जिस्म के बीच शारीरिक प्रेम के स्मारक तक सीमित रखने की बजाए अपनी समझ को इस स्मारक पर अंकित दिव्य हिदायतें सीखने और पालन करने पर लगाएं और इंसान को दिल और दिमाग की अच्छाइयां आत्मसात करते हुए बेहतर और संसार में अधिक उपयोगी नागरिक बनने की कोशिश करनी चाहिए। |
| **Nigaah-e Shauq** | **निगाह-ए शॉक** |
| 20.  As per the Poet of the East, Dr Sir Mohammad Iqbal: | 20. पूर्व के कवि, डॉ. सर मोहम्मद इकबाल के अनुसार: |
| *Kuchhaur hi nazar aata hai kaarobaar-e jahaan*  *Nigaah-e  shauq  agar  ho  shareek-e  beenaee.* | कुछ और ही नज़र आता है कारोबार-ए जहान  निगाह-ए शौक अगर हो शरीक-ए-बीनाई। |
| One finds the world to be an altogether different phenomenon,When one includes *Nigaah-e-Shauq* in one’s canvas of perception. | लोगों को दुनिया पूरी तरह अलग परिदृश्य में दिखाई देती है, जिसमें वे अपनी धारणा के ताने-बाने में निगाह-ए-शौक शामिल करते हैं। |
| (Iqbal’s concept of *Nigaah-e-Shauq* means perceiving Godly design in all that one sees.) | (इकबाल की निगाह-ए-शौक अवधारणा का मतलब है कि जो कुछ हमें दिखाई दे, उसे हम ईश्वर की रचना समझें।) |